अरहर की फसल में समेकित कीट प्रबंधन

डा. आर. पी. सिंह

वरिष्ठ एवं अध्यक्ष, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र,

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

1. **पत्ती एवं प्ररोह मोड़क कीट** : यह कीट जुलाई–अगस्त में सर्वाधिक सक्रिय रहता है। पौधे की निचली सतह की पत्ती पर इसका प्रभाव अधिक होता है। इसकी सूड़ी उपरी ३–४ पत्तियों को मोड़कर एक लूप जैसा बना लेती है और उसी को खाती रहती है। इस प्रकार क्षतिग्रस्त पौधे की वृद्धि रूक जाती है।

2. **फली भेदक कीट :** प्रौढ़ मादा कीट अरहर के पुष्पों, फलियों, कोमल फलियों एवं कभी–कभी प्ररोह के अग्रभाग पर एक–एक करके अण्डे देती है। रात्रि में दिये गये गोल अण्डों से २–५ दिनों में गिडारें निकलकर करीब ४–५ दिनों तक फलियों के ऊपरी भाग को खुरचकर खाती हैं। तत्पश्चात् गिडारें (सूडियॉ) फलियों में गोलाकार छिद्र बनाकर विकसित हो रहे दानों को खा जाती हैं तथा छिद्रों के स्थान पर सूड़ी का मल लगा रहता है।

3. **फली मक्खी :** यह कीट अरहर का प्रमुख शत्रु है। वयस्क मक्खी धात्विक हरे रंग की होती है। इस कीट के जीवन काल का अण्डा, गिडार एवं प्यूपा जैसी सभी अवस्थाएँ फली के भीतर ही पूरी होती हैं। अण्डों से निकलने के बाद गिडारें विकसित दानों की वाह्य पर्त को कुछ समय तक खाती हैं, तत्पश्चात् ये दानों में छेदकर प्रवेश कर जाती हैं एवं भीतर ही भीतर दानों को खाकर क्षति पहुँचाती हैं। पूर्ण विकसित गिडार दाने पर नालीनुमा स्थान बनाकर दाने से बाहर आ जाती है।

समेकित कीट प्रबंधनः

- ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे भूमि के अन्दर उपस्थित कृमिकोष आदि नष्ट हो जाएं।
- नीम की खली २ क्विंटल/हेक्टेयर अथवा मूँगफली की खली १० क्विंटल/हेक्टेयर की दर से खेत की अन्तिम जुताई तक प्रयोग करना चाहिए।
- कीट अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे-नरेन्द्र अरहर -२, **मालवीय विकल्प, जे. ए. 4, बी. आर. जी.-2, टी.जे.टी.-501, लाम 41, बी.डी.एन. 70,** सी.ओ.आर.जी. ६७०१, आई.सी.पी.एल. ३३२ आदि प्रजातियों को लगाना चाहिए।
- बाजरे की उँची लाक वाली प्रजाति को अरहर के साथ उगाने से चिड़िया उनपर बैठकर कीटों का प्राकृतिक रूप से नियंत्रण करती हैं।
- फसल की बुवाई संस्तुत दूरी (पंक्ति से पंक्ति की दूरी ६०-७० सेमी० तथा पौध से पौध की दूरी २५ सेमी०) पर ही करनी चाहिए।
- **फली भेदक** कीट के लिए जब फसल ६०-६५ दिन (सितम्बर-अक्टूबर) की हो जाए तब गन्धपास (फेरोमोन ट्रैप) का उपयोग करना चाहिए। एक से दूसरे गंधपास की दूरी ३० मीटर होनी चाहिए तथा फसल से १-२ फिट उपर रहे। १४ दिन के अन्तराल पर ल्योर आवश्यकता अनुसार बदलते रहना चाहिए तथा उसपर आकर्षित नर प्रौढ़ कीट को नष्ट कर देना चाहिए।

- फली भेदक कीट के ५-६ अण्डे/पौधा या १-२ सूड़ी/पौधा से अधिक दिखायी देने पर नीम बीज पाउडर के ५ प्रतिशत घोल को १ प्रतिशत साबून के घोल के साथ मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- **फली** भेदक कीट की हानि आर्थिक क्षति स्तर पर पहुँचने पर १५ दिनों के अन्तराल पर एच०एन०पी०वी० की २५० लार्वा समतुल्यांक मात्रा/हेक्टेयर की दर से ३ बार छिड़काव करना चाहिए। इस घोल को प्रभावी बनाने के लिए ०.५ प्रतिशत गुड़ व ०.१ प्रतिशत साबुन या टिपॉल का घोल मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- यदि कीट का नियंत्रण सही तरीके से नहीं हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे- **फ्लुबेन्दियामाइड 39.35% एस.सी. 1 मिलि/5लीटर पानी या** इण्डाक्साकार्व १५.८ प्रतिशत ई.सी. की १ मिली०/लीटर पानी या स्पाइनोसैड ४५ प्रतिशत एस.पी.१ मिली०/२लीटर पानी या इमामेक्टिन बेंजोएट ५ प्रतिशत एस.जी.की. १ मिली०/२-३ लीटर पानी की दर से ५० प्रतिशत फूल आने तथा ५० प्रतिशत फली आने पर छिड़काव करना चाहिए।
- **फल मक्खी कीट नियंत्रण हेतु डेल्टामेथ्रिन 2.8 प्रतिशत ई.सी. या डेल्टामेथ्रिन 1 प्रतिशत ई.सी. + ट्राईजोफ़ॉस 35 प्रतिशत ई.सी. की 1 मिली/ली.** पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।